ऐतिहासिक नाटककार डॉ. रामकुमार वर्मा

कु. उषा श्रीवास्तव

निर्देशक

डॉ. रामकुमार खण्डेलवाल

श्रद्धेय
डॉ वर्मा
को
समर्पित

कुमारी उषा श्रीवास्तव
४७२ बख्शी खुर्द
दारागंज
इलाहाबाद

२४.९.७२

ऐतिहासिक नाटककार डॉ. रामकुमार वर्मा

(उस्मानिया विश्वविद्यालय की एम. ए. अन्त्य १९६९–७० की परीक्षा के चतुर्थ प्रश्न-पत्र के विकल्प में प्रस्तुत लघु प्रबन्ध)

कु. उषा श्रीवास्तव

निर्देशक

डॉ. रामकुमार खण्डेलवाल

* भूमिका *

प्रबन्ध का विषय :-

आधुनिक ऐतिहासिक नाट्य-साहित्य के क्षेत्र में डा. रामकुमार जैसे मौलिक प्रतिभाशाली नाटक एवं एकांकीकार ने भारतीय एवं पाश्चात्य शैलियों का आधार ले कर एक सुन्दर सामंजस्य प्रस्तुत किया है । भारतीय नाट्य-साहित्य में ऐतिहासिक नाटकों का वह स्वरूप नहीं दिखाई देता जिसका गम्भीर दिग्दर्शन डा. वर्मा के साहित्य में होता है । यद्यपि ऐतिहासिक नाटकों के क्षेत्र में प्रसाद जी का अपना स्थान अक्षुण्ण है । तथापि प्रसाद जी का क्षेत्र विस्तार पौराणिक काल से आरम्भ होकर गुप्त-काल पर समाप्त हो जाता है परन्तु डा. वर्मा का क्षेत्र लगभग पौराणिक युग से आरम्भ होकर नवीनतम युग तक विस्तृत है ।[1] देश और काल की जितनी तथ्यपूर्ण व बहुमूल्य झांकियां डा. वर्मा के साहित्य में उपलब्ध हैं अन्यत्र नहीं । डा. वर्मा एक कुशल इतिहासज्ञ भी हैं जिसका सफल निर्वाह उन्होंने अपने नाट्य-साहित्य में किया है । डा. वर्मा एक ऐसे कलाकार हैं जो भारतीय नाट्य-साहित्य को नवीन दिशा देने में समर्थ हैं । ऐतिहासिकता के कोण से उनके नाट्य-साहित्य का विवेचन ही प्रस्तुत प्रबन्ध का उद्देश्य है । प्रसाद जी भी अपने ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास तत्व का उतना सफल निर्वाह नहीं कर सके हैं जितना डा. वर्मा ।[2] आधुनिक युग में डा. वर्मा ही ऐसे एकांकी व नाटककार हैं जिनके साहित्य में ऐतिहासिक तत्व को विशिष्ट स्थान मिला है ।

---

१. पौराणिक युग सम्बन्धी - डा. वर्मा का एकांकी " राजरानी सीता " तथा आधुनिक युग सम्बन्धी नवीनतम कृति " क्रान्तिदूत शास्त्री " है ।

२. देखिए -- प्रस्तुत के प्रकरण ५ के अन्तर्गत " रात का रहस्य " नामक एकांकी

प्रबन्ध-योजना :-

प्रस्तुत प्रबन्ध दस खण्डों में विभक्त है । प्रथम प्रकरण का शीर्षक है " ऐतिहासिक नाटक एवं स्वांतियों का विकास " इसके प्रथम भाग में इतिहास व साहित्य की विवेचना प्रस्तुत की गई है । द्वितीय भाग में इतिहास व नाटक के सम्बन्ध में विश्लेषण तृतीय भाग में अनेक उप-विभागों के अन्तर्गत वैदिक काल से आधुनिक काल तक के ऐतिहासिक नाटक व नाटककारों की सूची है । चतुर्थ विभाग में स्वांकी के उद्भव व विकास की विवेचना, ऐतिहासिक स्वांकीकारों की सूची तथा अन्त में " बांग्ल स्वांतियों का हिन्दी स्वांकी साहित्य पर प्रभाव प्रस्तुत किया गया है ।

द्वितीय प्रकरण में आलोच्य स्वांकी एवं नाटककार के स्वांकी कला सम्बन्धी विचारों की विवेचना प्रस्तुत की गई है । डा. वर्मा आधुनिक स्वांकी साहित्य के जन्म-दाता माने जाते हैं । अतएव स्वांकी के प्रति उनके विचारों व मान्यताओं की उपादेयता निश्चित रूप से साहित्यकार व पाठक के लिए बढ़ जाती है ।

तृतीय प्रकरण में डा. वर्मा के समस्त ऐतिहासिक नाट्य व स्वांकी साहित्य का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है ।

चतुर्थ प्रकरण में डा. वर्मा के नाटकों की ऐतिहासिक तत्व के दृष्टिकोण से विस्तृत विवेचना प्रस्तुत है ।

पंचम प्रकरण का आधार भी ऐतिहासिकता की समीक्षा की है । चतुर्थ एवं पंचम संस्करण में ऐतिहासिकता की समीक्षा के लिए विदेशी इतिहासकार स्मिथ, कैप्टन टॉड तथा भारतीय इतिहासकार राधा कुमुद मुखर्जी, जदुनाथ सरकार, भंडारकर आदि के ग्रन्थों का आधार लिया गया है ।

षष्ठ प्रकरण में डा. वर्मा की भाषा, शैली, संवाद आदि की विवेचना की गई है ।

सप्तम संस्करण में डा. वर्मा के नाटकों व एकांकियों में देश, काल तथा वातावरण का कहाँ तक सफल निर्वाह हुआ है, यह विश्लेषित व विवेचित किया गया है।

अष्टम संस्करण में डा. वर्मा के नाटकीय पात्रों तथा चरित्र चित्रण की विवेचना, मनोविज्ञान, संस्कार संघर्ष आदि शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत की गई है।

रंगमंच व अभिनेयता के दृष्टिकोण से डा. वर्मा के नाट्यसाहित्य का सर्वाधिक महत्व है। नवम प्रकरण में अभिनेयता के कोण से डा. वर्मा के साहित्य को प्रस्तुत किया गया है।

दशम प्रकरण में डा. वर्मा की समकालीन एकांकीकारों से अनेक तथ्यों के आधार पर तुलना व विवेचना प्रस्तुत की गई है।

डा. वर्मा एकांकी के जनक माने जाते हैं। अतः उनके एकांकीकार रूप की तुलना अन्य एकांकीकारों से आवश्यक हो जाती है। विस्तारभय के कारण नाटककार रूप की तुलना अन्य नाटककारों से करना उचित नहीं प्रतीत हुआ।

इस प्रकार प्रस्तुत प्रबन्ध में ऐतिहासिकता का आधार ग्रहण कर डा. वर्मा के साहित्य का अनुशीलन किया है। अनुशीलन के प्रस्तुत विषय डा. वर्मा की मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने अत्याधिक व्यस्त रहने पर भी समय-समय पर मेरे प्रश्नों तथा शंकाओं आदि का निवारण भी किया है तथा सामग्री चयन आदि में अपना योग दिया है।

इस ऐतिहासिक अध्ययन को प्रस्तुत करने में मुझे सर्वाधिक सहायता, श्रीमती सुविदा राजदाना, अध्यक्ष इतिहास विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय से मिली है। उन्होंने अपने विस्तृत ज्ञान के आधार पर अनेक ग्रन्थ तथा अध्ययन की अन्य सामग्री से मुझे परिचित कराया तथा अवसर पड़ सामग्री भी स्वयं उपलब्ध की। उनकी इतनी

बड़ी सहायता के बिना मेरे लिए यह अध्ययन प्रस्तुत करना सम्भव न था । उनके प्रति आभार व्यक्त करने में मेरे शब्द सर्वथा असमर्थ हैं ।

श्रद्धेय गुरुवर डा. रामकुमार वर्मा जी के प्रति चिर-कृतज्ञ हूँ जिनके चिन्तन तथा स्नेहपूर्ण निर्देशन के कारण प्रस्तुत प्रबन्ध पूर्ण हो सका है । डा. रामनिरंजन पाण्डेय तथा डा. राजकिशोर पाण्डेय के तथा अन्य सभी प्राध्यापक गण के मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिनके सुझावों व मार्ग-दर्शन ने मेरी अनेक कठिनाइयों का निवारण किया ।

उषा श्रीवास्तव

(उषा श्रीवास्तव)

दिनांक - - १९७९

" अनुक्रमणिका "

भूमिका - पृष्ठसंख्या

I १ I ऐतिहासिक नाटक एवं एकांकियों का विकास - 1 - 70

(१.१) इतिहास व साहित्य (1 - 10)

(१.२) इतिहास व नाटक (11 - 15)

(१.३) ऐतिहासिक नाटकों का उद्भव (16 - 42)

१.३१ पौराणिक काल

१.३२ जैन व बौद्ध काल

१.३३ मध्यकालीन ऐतिहासिक नाटक

१ ३४ आधुनिक काल

१ ३५ भारतेन्दु युग

१ ३६ प्रसाद युग

१ ३७ प्रसादोत्तर युग

(१.४) हिन्दी एकांकी का उद्भव एवं विकास(42 - 70)

१ ४१ एकांकी का पूर्व रूप

१ ४२ आधुनिक एकांकी

१ ४३ आधुनिक एकांकी परिभाषा

१.४४ एकांकी व नाटक

१ ४५ एकांकी व कहानी

१ ४६ बांग्ल एकांकियों का उदय व हिन्दी-एकांकियों पर प्रभाव

पृष्ठसंख्या

‡ २ ‡	डा. वर्मा के एकांकी कला सम्बन्धी विचार -	71 - 89
	२ १ डा. वर्मा एवं इतिहास	
	२ २ डा. वर्मा एवं ऐतिहासिक नाटक	
	२ ३ डा. वर्मा एवं संस्कृति	
	२ ४ डा. वर्मा एवं आदर्शवाद	
	२ ५ डा. वर्मा एवं यथार्थवाद	
	२ ६ डा. वर्मा एवं जीवनाभिव्यक्ति	
	२ ७ डा. वर्मा एवं कल्पना	
	२ ८ डा. वर्मा एवं एकांकी नाटक रचना प्रक्रिया	
	२ ८ १ पात्र	
	२ ८ २ कौतूहल	
	२ ८ ३ चरम सीमा	
	२ ८ ४ संवाद	
	२ ८ ५ चरित्र चित्रण	
	२ ८ ६ संकलनत्रय	
	२ ८ ७ उद्देश्य	
	२ ८ ८ हास्य व व्यंग्य	
	२ ८ ९ रंगमंच	
‡ ३ ‡	डा. वर्मा के ऐतिहासिक नाटक व एकांकी -	90 - 103
	३ १ डा. वर्मा का नाट्य साहित्य : परिचय	
	३ २ डा. वर्मा के ऐतिहासिक नाटक	
	३ ३ १ राजस्थान सम्बन्धी ऐतिहासिक नाटक	
	राजस्थान का महत्व	

पृष्ठसंख्या

राणा प्रताप

जौहर की ज्योति

सारंग स्वर

३ २ २ मौर्यकालीन नाटक

मौर्य युग का महत्व

विजय पर्व

अशोक का शोक

३ २ ३ बौद्धकालीन नाटक

बौद्ध काल का महत्व

कला और कृपाण

३ २ ४ मराठा कालीन नाटक

मराठों का महत्व

नाना फड़नवीस

३ ३ डा. वर्मा के ऐतिहासिक एकांकी

३ ३ २ बौद्धकालीन एकांकी

अभियोग

रात का रहस्य

३ २ २ मौर्यकालीन एकांकी

मर्यादा की वेदी पर

कौमुदी महोत्सव

सौन का मस्तान

चारुमित्रा

पृष्ठसंख्या

वासवदत्ता

स्वर्णश्री

३ ३ ३-गुप्तकालीन एकांकी

श्री विक्रमादित्य

समुद्रगुप्त का पराक्रमांक

कृपाण की धार

कादम्ब या विष

३ ३ ४-हर्षकालीन एकांकी

राज्यश्री

३ ३ ५- राजपूतकालीन एकांकी

भाग्य नक्षत्र

तैमूर की हार

दीपदान

कलंक रेखा

दुर्गावती

३ ३ ६- मराठाकालीन एकांकी

पानीपत की हार

नाना फड़नवीस

शिवाजी

३ ३ ७- मुगलकालीन एकांकी

दीने इलाही

औरंगजेब की आखिरी रात

पृष्ठसंख्या

सूचतालिका

वाजिद अलीशाह

। ४ । डा. वर्मा के नाटकों में ऐतिहासिकता - 104 - 173

४ १ बौद्धकालीन नाटक कला और कृपाण 104-115

४ १ १- कथावस्तु

४ १ २- कथावस्तु का निर्वाह

४ १ ३- ऐतिहासिकता

४ १ ४- कल्पना तत्व

४ १ ५- भाषा

४ १ ६- कथोपकथन

४ १ ७- चरित्र चित्रण

४ १ ८- रस

४ १ ९- उद्देश्य

४ २ मौर्यकालीन नाटक विजय पर्व एवं अशोक का शोक 116-134

४ २ १- कथावस्तु

४ २ २- ऐतिहासिकता

४ २ ३- काल्पनिक पात्र

४ २ ४- घटना

४ २ ५- चरित्र चित्रण

४ २ ६- नाटकीय तत्व

४ ३ मराठाकालीन नाटक नाना फडनवीस 135-148

पृष्ठसंख्या

४ ३ १- कथावस्तु

४ ३ २- ऐतिहासिकता

४ ३ ३- घटना

४ ३ ४- पात्र

४ ३ ५- चरित्र चित्रण

४ ३ ६- युग सन्देश

४.४ राजपूतकालीन नाटक 149 - 158

४ ४ १ १ - जौहर की ज्योति

४ ४ १ २ - कथावस्तु

४ ४ १ ३ - ऐतिहासिकता

४ ४ १ ४ - चरित्र चित्रण

४ ४ १ ५ - संवाद

४ ४ १ ६ - उद्देश्य

४ ४ २ १ - महाराणा प्रताप

४ ४ २ २ - कथावस्तु

४ ४ २ ३ - ऐतिहासिकता

४ ४ २ ४ - चरित्र चित्रण

४ ४ २ ५ - संवाद

४ ४ २ ६ - उद्देश्य

४ ४ ३ १ - सारंग स्वर 167 - 173

४ ४ ३ २ - कथावस्तु

४ ४ ३ ३ - ऐतिहासिकता

पृष्ठसंख्या

४ ४ ३ ४ - चरित्र चित्रण

४ ४ ३ ५ - संवाद

४ ४ ३ ६ - उद्देश्य

(५) डा. वर्मा के एकांकियों में ऐतिहासिकता - 174 -240

५ १ बौद्धकालीन एकांकी 174 - 176

रात का रहस्य

५ २ मौर्य-कालीन एकांकी 177 - 193

५ २ १ - मर्यादा की वेदी पर

५ २ २ - कौमुदी महोत्सव

५ २ ३ - वासवदत्ता

५ २ ४ - स्वर्ण श्री

५ ३ गुप्तकालीन एकांकी 194 - 207

५ ३ १ - श्री विक्रमादित्य

५ ३ २ - समुद्रगुप्त का पराक्रमांक

५ ३ ३ - कृपाण की धार

५ ३ ४ - कादम्ब या विष

५ ४ हर्षकालीन एकांकी 208 - 211

५ ४ २ - राज्यश्री

५ ५ राजपूत कालीन एकांकी 212 - 224

५ ५ १ - मागुध नदात्र

५ ५ २ - कलंक रेखा

५ ५ ३ - दीपदान

पृष्ठसंख्या

५ ५ ४ - तैमूर की हार

५ ५ ५ - दुर्गावती

५ ६ मराठा कालीन एकांकी 225 - 229

५ ६ १ - शिवाजी

५ ७ मुगल कालीन एकांकी 232 - 237

५ ७ १ - दीपै दलाली

५ ७ २ - औरंगजेब की आखिरी रात

५ ७ ३ - वाजिद अलीशाह

५ ८ आधुनिक एकांकी 238 - 240

५ ८ १ - बापू

५ ८ २ - क्रान्तिदूत शास्त्री

X ६ I डा वर्मा की भाषा शैली 241 - 253

६ १ आधुनिक काल में भाषा की उपयोगिता

६ २ डा वर्मा का भाषा सम्बन्धी मत

६ ३ डा वर्मा की भाषा

६ ४ साधारण संवाद

६ ५ अलंकृत संवाद

६ ६ दार्शनिक संवाद

६ ७ हास्य व्यंग्य

६ ८ नृत्य व गीत

६ ६ डा. वर्मा की शैली

पृष्ठसंख्या

(७)	देश-काल तथा वातावरण -	244 - 258
	७ १ देश-काल वातावरण का महत्त्व	
	७ २ आलोच्य नाटककार का मत	
	७ ३ भारतीय संस्कृति एवं नाटककार	
	७ ४ आलोच्य नाटक	
(८)	पात्र तथा चरित्र चित्रण	259 - 265
	८ १ पात्रों की महत्ता	
	८ २ इतिहास एवं पात्र	
	८ ३ चरित्र चित्रण का महत्त्व	
	८ ४ चरित्र चित्रण की प्रणालियाँ	
	८ ५ मनोविज्ञान	
	८ ६ मनोविज्ञान	
	८ ७ संघर्ष व अन्तर्द्वन्द्व	
	८ ८ कौतूहल	
(९)	डा. वर्मा के व नाटकों में अभिनेयता -	266 - 276
	९ १ पाठ्य एवं रंगमंचीय नाटकों का भेद	
	९ २ अभिनय के प्रकार	
	९ ३ रंगमंच का उदय एवं विकास	
	९ ४ रंगमंच एवं डा वर्मा	
	९ ५ रंगमंच व रेडियो नाटक	
	९ ६ आलोच्य नाटक एवं अभिनेयता	

पृष्ठसंख्या

[१०] डा. वर्मा तथा अन्य एकांकीकार - 249 - 284

१०.१ आधुनिक एकांकी एवं डा. वर्मा

१०.२ पाश्चात्य एकांकी एवं डा. वर्मा

१०.३ भुवनेश्वर प्रसाद व डा. वर्मा

१०.४ उदयशंकर भट्ट डा. वर्मा

१०.५ लक्ष्मीनारायण मिश्र व डा. वर्मा

१०.६ अश्क जी व डा. वर्मा

१०.७ हरिकृष्ण प्रेमी व डा. वर्मा

१०.८ जगदीशचन्द्र माथुर व डा. वर्मा

[११] उपसंहार - 285 - 296

परिशिष्ट १ अंग्रेजी मूल उद्धरण 295 - 321

परिशिष्ट २ डा. वर्मा का साहित्य

परिशिष्ट ३ संदर्भ ग्रन्थ

परिशिष्ट ४ वर्मा साहित्य सम्मतियां

परिशिष्ट ५ डा. वर्मा से भेंट

0000000
00000
000
0